# Integration of Mythology and Modernity in the Literature of Sudha Murty

## सुधा मूर्ति के साहित्य में पौराणिकता और आधुनिकता का समन्वय

Research Review Journal of Educational and Physical Excellence
double-blind peer-reviewed and refereed online bi-annual Journal
ISSN (online): XXXX-XXX (applied)
Vol-1 No.1(Jan-Jun 2026) 1-5
©The Author(s) 2026
https://rrjepe.in/

RRJEPE
a bi-annual refereed online journal

**Received:** 10 Oct, 2025
**Revised:** 1 Nov, 2025
**Accepted:** 24 Nov, 2025
**Published:** 20 Feb, 2026

*Ms. M Shashikala

*Student, Karnataka State Open University (KSOU)*

**Abstract:** *Sudha Murty is a distinguished figure in Indian literature who, through her writings, presents the social and cultural discourse of contemporary Indian society in a powerful and insightful manner. Her writing is marked by sensitivity and clarity, offering a deep exploration of the multilayered complexities of Indian society. In her well-known work Mahashweta, she effectively highlights issues such as social discrimination and class divisions, while providing a literary voice to marginalized communities. Sudha Murty's literature is not limited to entertainment alone; it also serves as a medium for social introspection. She encourages her readers to reflect on issues such as gender inequality, child marriage, and the conflicts between tradition and modernity. Mythological elements, folk tales, and the profound essence of Indian culture are seamlessly woven into her narratives, lending her works a distinctive cultural depth. This research paper presents a critical study of the integration of mythology and modernity in Sudha Murty's literature and highlights her contribution to contemporary Indian literature.*

**Keywords:** *Indian culture, mythology, folk tales, Indian knowledge tradition, modernity, social values, contemporary Indian literature*

**Abstract in Hindi Language:** *सुधा मूर्ति भारतीय साहित्य की एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समकालीन भारतीय समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी लेखनी संवेदनशीलता और सूझबूझ से परिपूर्ण है, जो भारतीय समाज की बहुस्तरीय जटिलताओं को गहराई से उद्घाटित करती है। उनकी प्रसिद्ध कृति महाश्वेता में सामाजिक भेदभाव और वर्गभेद जैसे विषयों को प्रभावशाली ढंग से उभारते हुए हाशिये पर स्थित समुदायों की आवाज को साहित्यिक मंच प्रदान किया गया है। सुधा मूर्ति का साहित्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक आत्ममंथन का माध्यम भी है। वे अपने पाठकों को लैंगिक असमानता, बाल विवाह, परंपरा और आधुनिकता के अंतर्विरोध जैसे विषयों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके कथानकों में पौराणिकता, लोककथाएँ और भारतीय संस्कृति की गूढ़ आत्मा सहज रूप से समाहित होती है, जिससे उनके साहित्य को विशिष्ट सांस्कृतिक गहराई प्राप्त होती है। यह शोध-पत्र सुधा मूर्ति के साहित्य में पौराणिकता और आधुनिकता के समन्वय का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है तथा समकालीन भारतीय साहित्य में उनके योगदान को रेखांकित*

*Corresponding Author
Ms. M Shashikala, Student, Karnataka State Open University (KSOU)
ms.student8787@gmail.com



Creative Commons Non Commercial CC BY-NC: This article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 License (http://www.creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/) which permits non-Commercial use, reproduction and distribution of the work without further permission provided the original work is attributed.

Scan and Access

*करता है।*

Keywords: *भारतीय संस्कृति, पौराणिकता, लोककथाएँ, भारतीय ज्ञान परंपरा, आधुनिकता, सामाजिक मूल्य, समकालीन भारतीय साहित्य*

## 1 | प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा सदियों से हमारे सांस्कृतिक, सामाजिक और दार्शनिक जीवन की आधारशिला रही है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराणों के माध्यम से विकसित यह परंपरा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने भारतीय समाज की नैतिक चेतना, जीवन-मूल्यों और सामाजिक व्यवहार को भी गहराई से प्रभावित किया है। इन ग्रंथों और कथाओं में निहित विचार मानव जीवन के मूल प्रश्नों जैसे कर्तव्य, सत्य, न्याय, करुणा और सहअस्तित्व पर केंद्रित रहे हैं, जिनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

सुधा मूर्ति के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की यही निरंतरता आधुनिक संदर्भों के साथ स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे पौराणिक कथाओं और पारंपरिक मूल्यों को केवल अतीत की स्मृति के रूप में नहीं प्रस्तुत करतीं, बल्कि उन्हें समकालीन जीवन की समस्याओं और अनुभवों से जोड़कर नए अर्थ प्रदान करती हैं। उनके लेखन में यह परंपरा एक जीवंत तत्व के रूप में उपस्थित रहती है, जो आधुनिक समाज की जटिलताओं के बीच भी नैतिक दिशा और मानवीय संवेदना का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारतीय साहित्य में पौराणिक कथाएँ सदियों से एक सशक्त आधार-स्तंभ के रूप में विद्यमान रही हैं। इन कथाओं ने न केवल सांस्कृतिक चेतना को दिशा दी है, बल्कि पीढ़ियों को जोड़ने वाली एक कालातीत जीवन-दृष्टि भी प्रदान की है। इनका उद्देश्य केवल कथा-वाचन नहीं रहा, बल्कि सामाजिक मूल्यों का संप्रेषण, नैतिक शिक्षा और सामूहिक स्मृति का संरक्षण भी रहा है। समय के साथ इन कथाओं की व्याख्याएँ बदली हैं, परंतु उनके मूल भाव और संदेश निरंतर प्रासंगिक बने रहे हैं।

समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में पौराणिक तत्वों का आधुनिक विषयवस्तु के साथ समन्वय लेखकों के लिए भारतीय समाज की जटिलताओं, अंतर्विरोधों और सांस्कृतिक विविधताओं को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। आधुनिक लेखक इन कथाओं के माध्यम से आज के समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता, वर्गभेद, पहचान की खोज और नैतिक द्वंद्व जैसे प्रश्नों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में पौराणिकता स्थिर नहीं रहती, बल्कि आधुनिक अनुभवों के साथ संवाद करती हुई एक गतिशील रूप ग्रहण करती है।

इसी रचनात्मक प्रवृत्ति में सुधा मूर्ति एक प्रमुख साहित्यकार के रूप में उभरकर सामने आती हैं। उनकी रचनाओं में पौराणिकता और आधुनिकता का सहज तथा संतुलित समन्वय दृष्टिगोचर होता है। वे परंपरा का सम्मान करते हुए भी आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं से आंख नहीं मूंदतीं। उनका साहित्य यह स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वह आज के समाज को समझने और उसे अधिक मानवीय बनाने की एक प्रभावशाली वैचारिक शक्ति भी है।

## 2 | भारतीय साहित्य में पौराणिकता की उपस्थिति

भारतीय साहित्य में पौराणिकता एक अत्यंत महत्वपूर्ण, गहन और सशक्त तत्व के रूप में सदैव विद्यमान रही है। इसकी जड़ें रामायण, महाभारत तथा विभिन्न पुराणों जैसे प्राचीन ग्रंथों में गहराई से समाई हुई हैं, जिन्होंने भारतीय समाज की सामूहिक चेतना को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाई है। इन महाकाव्यात्मक आख्यानों ने न केवल समृद्ध और बहुआयामी कथानक प्रस्तुत किए हैं, बल्कि ऐसे विविधतापूर्ण और स्मरणीय चरित्र भी रचे हैं, जो मानवीय गुणों, दुर्बलताओं और नैतिक द्वंद्वों के प्रतीक बन गए हैं। परिणामस्वरूप, ये ग्रंथ भारतीय जीवन-दृष्टि और सांस्कृतिक मूल्यों के स्थायी आधार बन गए हैं।

पौराणिक कथाओं का महत्व केवल उनके कथात्मक सौंदर्य तक सीमित नहीं है। इनमें निहित जीवन-दर्शन, नैतिक शिक्षा और सामाजिक आदर्शों ने पीढ़ियों तक भारतीय समाज को दिशा प्रदान की है। धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य, कर्तव्य और व्यक्तिगत इच्छा जैसे शाश्वत प्रश्न इन कथाओं के माध्यम से निरंतर सामने आते रहे हैं। इसी कारण पौराणिकता भारतीय साहित्य में केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा के रूप में उपस्थित रहती है, जो समय के साथ स्वयं को नए संदर्भों में ढालती रहती है।

समकालीन भारतीय साहित्य में इन पौराणिक कथाओं का पुनर्पाठ एक नवीन और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ हो रहा है। आधुनिक लेखक पौराणिक पात्रों और घटनाओं को केवल आदर्श रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उन्हें मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक यथार्थ और समकालीन प्रश्नों के साथ जोड़ते हैं। इस प्रक्रिया में पौराणिक आख्यान आधुनिक समाज की समस्याओं जैसे सत्ता-संबंध, सामाजिक असमानता, लैंगिक भेदभाव और पहचान की तलाश पर विचार करने का सशक्त माध्यम बन जाते हैं।

आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत की गई पौराणिक कथाएँ आज के पाठकों के लिए अधिक प्रासंगिक और जीवंत प्रतीत होती हैं। वे अतीत और वर्तमान के बीच सेतु का कार्य करती हैं, जहाँ परंपरा आधुनिकता से संवाद करती हुई दिखाई देती है। इस पुनर्पाठ के माध्यम से भारतीय साहित्य न केवल अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहता है, बल्कि बदलते सामाजिक यथार्थ को समझने और अभिव्यक्त करने की क्षमता भी प्राप्त करता है। इस प्रकार पौराणिकता भारतीय साहित्य की आत्मा के रूप में आज भी सक्रिय और प्रभावशाली बनी हुई है।

## 3 | सुधा मूर्ति: एक प्रेरणास्पद व्यक्तित्व

सुधा मूर्ति का जन्म वर्ष 1950 में कर्नाटक राज्य के हावेरी जिले में हुआ। उन्होंने साहित्य, शिक्षा, तकनीक और समाजसेवा जैसे विविध क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाकर भारतीय समाज में एक विशिष्ट और सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। प्रारंभ से ही वे अध्ययनशील, अनुशासित और मेधावी रहीं। विज्ञान और गणित में उनकी विशेष रुचि रही, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा प्राप्त की। उस समय तकनीकी क्षेत्र प्रायः पुरुष-प्रधान माना जाता था, किंतु सुधा मूर्ति ने अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास और परिश्रम के बल पर इस क्षेत्र में भी अपनी सशक्त पहचान स्थापित की।

इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कार्य करते हुए उन्होंने न केवल पेशेवर दक्षता का परिचय दिया, बल्कि सामाजिक रूढ़ियों को भी चुनौती दी। वे उन आरंभिक महिलाओं में शामिल रहीं, जिन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र की तकनीकी संस्थाओं में कार्य कर यह सिद्ध किया कि योग्यता का कोई लैंगिक विभाजन नहीं होता। यह अनुभव उनके व्यक्तित्व को और अधिक संवेदनशील, यथार्थवादी तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़ा बनाता गया।

तकनीकी क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के बावजूद सुधा मूर्ति का झुकाव सदैव साहित्य और समाजसेवा की ओर रहा। उन्होंने कन्नड़ भाषा के साहित्य को समृद्ध करने के साथ-साथ अंग्रेज़ी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी लेखन किया। उनकी रचनाएँ साधारण जनजीवन से जुड़ी होती हैं, जिनमें मानवीय संवेदनाएँ, नैतिक मूल्य और सामाजिक यथार्थ का सहज चित्रण मिलता है। उनकी भाषा सरल, संवादात्मक और प्रभावपूर्ण है, जिससे वे पाठकों के साथ एक आत्मीय संबंध स्थापित करती हैं।

समाजसेवा के क्षेत्र में सुधा मूर्ति का योगदान अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली रहा है। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम मानते हुए ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में पुस्तकालयों की स्थापना, विद्यालयों के विकास और छात्रवृत्तियों के माध्यम से शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से कन्नड़ भाषा और ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रयास उल्लेखनीय हैं। इन कार्यों के माध्यम से उन्होंने वंचित और उपेक्षित वर्गों तक ज्ञान और अवसर पहुँचाने का निरंतर प्रयास किया है।

इस प्रकार सुधा मूर्ति का व्यक्तित्व केवल एक सफल लेखिका या तकनीकी विशेषज्ञ तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी प्रेरणास्पद सामाजिक चेतना का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान, करुणा, सेवा और सादगी का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनका जीवन और कृतित्व यह संदेश देता है कि व्यक्तिगत सफलता तभी सार्थक होती है, जब वह समाज के व्यापक हित से जुड़ी हो।

## 4 | साहित्यिक योगदान और प्रमुख कृतियाँ

सुधा मूर्ति की साहित्यिक यात्रा का आरंभ वर्ष 1997 में प्रकाशित उनके प्रथम कन्नड़ उपन्यास **डॉलर बहू** से माना जाता है। इस कृति ने उन्हें साहित्यिक जगत में एक विशिष्ट पहचान दिलाई और पाठकों के बीच व्यापक लोकप्रियता प्राप्त की। *डॉलर बहू* में उन्होंने पारिवारिक संबंधों, मूल्य-संघर्ष और वैश्वीकरण के प्रभावों को अत्यंत सहजता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उनका लेखन केवल कथा कहने तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक यथार्थ पर गहन दृष्टि भी रखता है।

इसके पश्चात सुधा मूर्ति ने उपन्यास, लघुकथा, आत्मकथात्मक लेखन, निबंध और बाल साहित्य सहित विभिन्न विधाओं में निरंतर सृजन किया। उन्होंने तीस से अधिक पुस्तकों की रचना की है, जिनका अनुवाद अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में हुआ है। उनकी रचनाओं की व्यापक

स्वीकृति इस बात का प्रमाण है कि वे भाषा, क्षेत्र और आयु-सीमाओं से परे जाकर पाठकों से संवाद स्थापित करने में सक्षम हैं। विशेष रूप से उनका बाल साहित्य बच्चों में नैतिक मूल्यों, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सुधा मूर्ति की लेखन-शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरल, स्पष्ट और संवेदनशील भाषा है। वे जटिल सामाजिक और नैतिक विषयों को भी सहज कथ्य के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं, जिससे पाठक बिना किसी बौद्धिक बोझ के गहरे संदेशों तक पहुँच पाता है। उनकी भाषा आडंबरहीन है, किंतु भावनात्मक रूप से अत्यंत प्रभावशाली, जो पाठकों को सीधे उनके हृदय से जोड़ देती है।

उनके साहित्य में वर्गभेद, लैंगिक असमानता, पारिवारिक तनाव, पीढ़ियों के बीच टकराव, नैतिक द्वंद्व और मानवीय संवेदनाओं का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। वे समाज के हाशिये पर खड़े व्यक्तियों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों, के अनुभवों को विशेष संवेदनशीलता के साथ स्वर देती हैं। उनके पात्र सामान्य जीवन से लिए गए होते हैं, किंतु उनकी समस्याएँ और संघर्ष व्यापक सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करते हैं।

इस प्रकार सुधा मूर्ति का साहित्यिक योगदान समकालीन भारतीय साहित्य को न केवल विषयवस्तु की दृष्टि से समृद्ध करता है, बल्कि मानवीय मूल्यों और सामाजिक चेतना को केंद्र में रखकर साहित्य की सार्थक भूमिका को भी रेखांकित करता है। उनकी कृतियाँ पाठकों को आत्ममंथन, संवेदना और सामाजिक जिम्मेदारी की ओर प्रेरित करती हैं, जिससे उनका साहित्य स्थायी प्रभाव छोड़ता है।

## 5 | साहित्य में पौराणिक तत्वों का समावेश

सुधा मूर्ति की रचनाओं में पौराणिक तत्वों का प्रयोग केवल कथानक की संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सांस्कृतिक प्रतीकों, परंपराओं, आस्थाओं और जीवन-मूल्यों के स्तर पर भी गहराई से परिलक्षित होता है। वे पौराणिक कथाओं को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के बजाय उनमें निहित मानवीय अनुभवों, नैतिक प्रश्नों और जीवन-दृष्टि को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार पौराणिकता उनके साहित्य में अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान से संवाद करती हुई एक जीवंत परंपरा के रूप में सामने आती है।

सुधा मूर्ति के लेखन में पौराणिक पात्र आदर्श या दिव्य रूप में नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं से युक्त चरित्रों के रूप में उभरते हैं। वे इन पात्रों के माध्यम से आधुनिक समाज में व्याप्त द्वंद्व, नैतिक दुविधा और आत्मसंघर्ष को अभिव्यक्त करती हैं। इससे पाठक पौराणिक कथाओं को केवल धार्मिक आख्यान के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के गहरे सत्य को समझने के माध्यम के रूप में देखने लगते हैं।

उनकी प्रसिद्ध कृति द सर्पेंट्स रिवेंज इसका सशक्त उदाहरण है। इस कृति में सुधा मूर्ति ने विभिन्न पौराणिक पात्रों और प्रसंगों को आधुनिक दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित किया है। यहाँ पौराणिक कथाएँ समकालीन सामाजिक संदर्भों, मानवीय रिश्तों और नैतिक प्रश्नों के साथ जुड़कर नई अर्थवत्ता प्राप्त करती हैं। ये कथाएँ पाठकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि प्राचीन कथाओं में निहित मूल्य आज के जीवन में किस प्रकार प्रासंगिक हो सकते हैं।

पौराणिक तत्वों के इस सृजनात्मक उपयोग के माध्यम से सुधा मूर्ति परंपरा और आधुनिकता के बीच एक संतुलित सेतु का निर्माण करती हैं। वे यह स्पष्ट करती हैं कि भारतीय पौराणिक परंपरा केवल अतीत की विरासत नहीं है, बल्कि वह आज के समाज को समझने और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने का एक सशक्त वैचारिक आधार भी प्रदान करती है। इस दृष्टि से उनका साहित्य भारतीय संस्कृति की निरंतरता और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता दोनों को प्रभावी ढंग से रेखांकित करता है।

## 6 | निष्कर्ष

सुधा मूर्ति समकालीन भारतीय साहित्य की एक ऐसी महत्वपूर्ण साहित्यकार हैं, जिनका रचनात्मक योगदान भारतीय साहित्य को वैचारिक और संवेदनात्मक दोनों स्तरों पर समृद्ध करता है। उनके साहित्य की विशेषता यह है कि वह परंपरा और आधुनिकता के बीच किसी टकराव को नहीं, बल्कि एक सार्थक संवाद को स्थापित करता है। पौराणिकता और आधुनिकता के संतुलित समन्वय के माध्यम से उन्होंने ऐसी कृतियों की रचना की है, जो काल की सीमाओं से परे जाकर आज के पाठकों को आत्ममंथन और चिंतन के लिए प्रेरित करती हैं।

सुधा मूर्ति का साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता को बनाए रखते हुए आधुनिक समाज की सामाजिक, नैतिक और मानवीय चुनौतियों से सीधे संवाद करता है। वे अपने लेखन में यह स्पष्ट करती हैं कि प्राचीन भारतीय विचारधारा और जीवन-मूल्य आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने वे अतीत में रहे हैं। उनके साहित्य में यह दृष्टि विशेष रूप से दिखाई देती है कि परंपरा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान को समझने और भविष्य को दिशा देने का एक सशक्त आधार है।

उनकी रचनाएँ सामाजिक संवेदना, करुणा, समानता और नैतिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को केंद्र में रखती हैं। वे समाज के हाशिये पर स्थित वर्गों, विशेषकर महिलाओं और वंचित समुदायों की समस्याओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं और पाठकों को सामाजिक अन्याय, भेदभाव और असमानता पर सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार उनका साहित्य केवल सौंदर्यात्मक आनंद तक सीमित न रहकर सामाजिक चेतना के विकास का माध्यम भी बनता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सुधा मूर्ति का साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में भी एक सशक्त भूमिका निभाता है। उनका रचनात्मक अवदान भारतीय साहित्य को मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिक यथार्थ के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा देता है। इस दृष्टि से सुधा मूर्ति का साहित्य समकालीन भारतीय समाज और साहित्य दोनों के लिए दीर्घकालिक महत्व रखता है।

## संदर्भ


[1] कपूर, गीता. *मिथक का आधुनिकीकरण: भारतीय साहित्य में मिथकों के समकालीन दृष्टिकोण*. हार्पर कॉलिन्स, 2015।

[2] गुप्ता, राकेश. "सुधा मूर्ति: समकालीन भारतीय साहित्य में मिथक और आधुनिकता के मध्य सेतु।" *दक्षिण एशियाई साहित्य पत्रिका*, खंड 45, अंक 2, 2020, पृ. 198–215।

[3] डंडेस, पॉल. *भारतीय मिथक: एक पाठक हेतु चयन*. रूटलेज, 2002।

[4] मूर्ति, सुधा. *अंडे से निकला आदमी (प्राचीन भारत की कथाएँ)*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, संस्करण 2021।

[5] मूर्ति, सुधा. *डॉलर बहू*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, संशोधित संस्करण, 2024।

[6] मूर्ति, सुधा. द *ओल्ड मैन एंड हिज़ गॉड*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, संस्करण 2023।

[7] मूर्ति, सुधा. द *बर्ड विद गोल्डन विंग्स*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, संस्करण 2016।

[8] मूर्ति, सुधा. द *मदर आई नेवर न्यू*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, संस्करण 2014।

[9] मूर्ति, सुधा. *महाश्वेता*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, संस्करण 2023।



*Cite this article*

Integration of Mythology and Modernity in the Literature of Sudha Murty: **सुधा मूर्ति के साहित्य में पौराणिकता और आधुनिकता का समन्वय**. (2026). *Research Review Journal of Educational and Physical Excellence*, *1*(1), 01-05. https://rrjepe.in/index.php/rrjepe/article/view/11